4 हॉकी का जादूगर

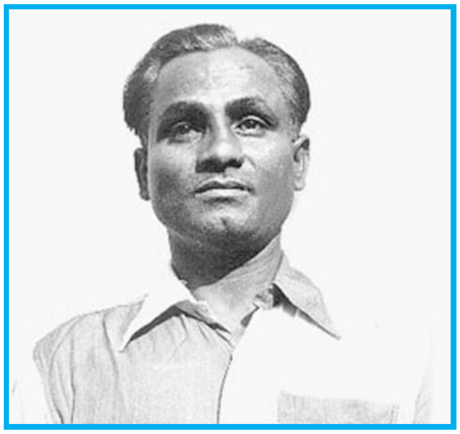

खेल के मैदान में धक्का-मुक्की और नोंक-झोंक की घटनाएँ होती रहती हैं। खेल में तो यह सब चलता ही है। जिन दिनों हम खेला करते थे, उन दिनों भी यह सब चलता था।

सन् 1933 की बात है। उन दिनों मैं पंजाब रेजिमेंट की ओर से खेला करता था। एक दिन पंजाब रेजिमेंट और सैंपर्स एंड माइनर्स टीम के बीच मुकाबला हो रहा था। माइनर्स टीम के खिलाड़ी मुझसे गेंद छीनने की कोशिश करते, लेकिन उनकी हर कोशिश बेकार जाती। इतने में एक खिलाड़ी ने गुस्से में आकर हॉकी स्टीक मेरे सिर पर दे मारी। मुझे मैदान से बाहर ले जाया गया।

थोड़ी देर बाद मैं पट्टी बाँधकर फिर मैदान में आ पहुँचा। आते ही मैंने उस खिलाड़ी की पीठ पर हाथ रख कर कहा- "तुम चिंता मत करो, इसका बदला मैं जरूर लूँगा।" मेरे इतना कहते ही वह खिलाड़ी घबरा गया। अब हर समय मुझे ही देखता रहता कि मैं कब

उसके सिर पर हॉकी स्टीक मारने वाला हूँ। मैंने एक के बाद एक झटपट छह गोल कर दिए। खेल खत्म होने के बाद मैंने फिर उस खिलाड़ी की पीठ थपथपाई और कहा- "दोस्त, खेल में इतना गुस्सा अच्छा नहीं। मैंने तो अपना बदला ले

ही लिया है। अगर तुम मुझे हॉकी नहीं मारते तो शायद मैं तुम्हें दो ही गोल से हराता।'' वह खिलाड़ी सचमुच बड़ा शर्मिंदा हुआ। तो देखा आपने मेरा बदला लेने का ढंग? सच मानो, बुरा काम करने वाला आदमी हर समय इस बात से डरता रहता है कि उसके साथ भी बुराई की जाएगी।

आज मैं जहाँ भी जाता हूँ बच्चे व बूढ़े मुझे घेर लेते हैं और मुझसे मेरी सफलता का राज जानना चाहते हैं। मेरे पास सफलता का कोई गुरु-मंत्र तो है नहीं। हर किसी से यही कहता हूँ कि लगन, साधना और खेल भावना ही सफलता के सबसे बड़े मंत्र हैं।

मेरा जन्म सन् 1904 में प्रयाग में एक साधारण परिवार में हुआ। बाद में हम झाँसी आकर बस गए। 16 साल की उम्र में मैं ''फर्स्ट ब्राह्मण रेजिमेंट'' में एक साधारण सिपाही के रूप में भर्ती हो गया। मेरी रेजिमेंट का हॉकी खेल में काफी नाम था। पर खेल में मेरी कोई दिलचस्पी नहीं थी। उस समय हमारी रेजिमेंट के सूबेदार मेजर तिवारी थे। वह बार-बार मुझे हॉकी खेलने के लिए कहते। हमारी छावनी में हॉकी खेलने का कोई निश्चित समय नहीं था। सैनिक जब चाहे मैदान में पहुँच जाते और अभ्यास शुरू कर देते। उस समय मैं एक नौसिखिया खिलाड़ी था।

जैसे-जैसे मेरे खेल में निखार आता गया, वैसे-वैसे मुझे तरक्की भी मिलती गई। सन् 1936 में बर्लिन ओलंपिक में मुझे कप्तान बनाया गया। उस समय मैं सेना में लांस नायक था। बर्लिन ओलंपिक में लोग मेरे हॉकी खेलने के ढंग से इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने मुझे ''हॉकी का जादूगर'' कहना शुरू कर दिया। इसका यह मतलब नहीं कि सारे गोल मैं ही करता था। मेरी तो हमेशा यह कोशिश रहती कि मैं गेंद को गोल के पास ले जाकर अपने किसी साथी खिलाड़ी को दे दूँ ताकि उसे गोल करने का श्रेय मिल जाए। अपनी इसी खेल भावना के कारण मैंने दुनिया के खेल प्रेमियों का दिल जीत लिया। बर्लिन ओलंपिक में हमें स्वर्ण पदक मिला।

खेलते समय मैं हमेशा इस बात का ध्यान रखता था कि हार या जीत मेरी नहीं, बल्कि पूरे देश की है।

– मेजर ध्यानचंद

शब्दार्थ :

टीम -	दल	**छावनी** -	सैनिक का विश्राम स्थल
निखार -	चमक	**नौसिखिया** -	नया सीखने वाला

प्रश्न-अभ्यास

पाठ से-

1. ध्यानचन्द किस खेल से सम्बन्ध रखते हैं?
2. दूसरी टीम के खिलाड़ी ने ध्यानचन्द को हॉकी स्टीक मारी। इसका बदला उन्होंने किस प्रकार लिया?
3. ध्यानचन्द ने अपनी सफलता का राज क्या बताया है?
4. 'दोस्त, खेल में इतना गुस्सा अच्छा नहीं'- ऐसा ध्यानचन्द ने क्यों कहा?
5. ध्यानचन्द को कब से "हॉकी का जादूगर" कहा जाने लगा?

पाठ से आगे-

1. अगर ध्यानचन्द हॉकी नहीं खेलते तो वो क्या कर रहे होते?
2. ध्यानचन्द की जगह अगर आप होते तो अपना बदला किस प्रकार लेते?
3. खेलते समय नोंक-झोंक क्यों हो जाते हैं?
4. विजेता बनने के लिए मनुष्य में क्या-क्या गुण होने चाहिए?

व्याकरण

1. थोड़ी देर बाद मैं पट्टी बाँधकर फिर मैदान में आ पहुँचा। आते ही मैंने उस खिलाड़ी की पीठ पर हाथ रखकर कहा -"तुम चिंता मत करो, इसका बदला मैं जरूर लूँगा" मेरे इतना कहते ही वह खिलाड़ी घबरा गया।

   ऊपर के वाक्य में **मैं, मैंने, उस, तुम, इसका, मेरे, इतना, वह** आदि शब्द संज्ञा की जगह आए हैं। ऐसे शब्द सर्वनाम कहलाते हैं।

   (संज्ञा के स्थान पर प्रयोग किए जाने वाले शब्द **सर्वनाम** कहलाते हैं।)

सर्वनाम के निम्नांकित छः भेद हैं।

(क) **पुरुषवाचक सर्वनाम** – जो शब्द बोलने वाले के लिए, सुननेवाले के लिए या किसी अन्य के लिए प्रयोग किए जाते हैaपुरुषवाचक सर्वनाम कहलाते हैं। जैसे – मैं, तुम, वह

(ख) **निश्चयवाचक सर्वनाम** – जिन शब्दों का प्रयोग किसी व्यक्ति या वस्तु की ओर संकेत के लिए किए जाएँ, वे निश्चयवाचक सर्वनाम कहलाते हैं। जैसे – उस, इसका, इतना

(ग) **अनिश्चयवाचक सर्वनाम** – जिन शब्दों के प्रयोग से किसी निश्चित व्यक्ति या वस्तु का बोध नहीं होता है, वे अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहलाते हैं। जैसे – कोई, कुछ

(घ) **प्रश्नवाचक सर्वनाम** – प्रश्न करने के लिए जिन सर्वनाम शब्दों के प्रयोग fd, जाते हैं, वे प्रश्नवाचक सर्वनाम कहलाते हैं। जैसे –कौन, क्या

(ङ) **सम्बन्धवाचक सर्वनाम** – जिन शब्दों से किसी व्यक्ति, वस्तु या घटना का संबंध जोड़ा जाता है, वे सम्बन्धवाचक सर्वनाम कहलाते हैं। जैसे – जो, से, जिसने, जैसा, तैसा

(च) **निजवाचक सर्वनाम** – जिन शब्दों का प्रयोग कर्त्ता अपने लिए करता है, वे निजवाचक सर्वनाम कहलाते हैं। जैसे – अपना, स्वयं, आप ही।

निम्नलिखित वाक्यों में मोटे अक्षरों में छपे सर्वनाम के भेद सामने कोष्ठक में लिखिए।

(क) **कौन** खा रहा है ? ( )

(ख) **मैं** अपने काम पर लौट आया। ( )

(ग) **यही** मेरा घर है। ( )

(घ) **जैसी** करनी वैसी भरनी। ( )

(ङ) मैं **स्वयं** चला जाऊँगा। ( )

(च) **कुछ** तो किया करो। ( )

2. इन शब्दों से वाक्य बनाइए।

धक्का-मुक्की ....

नोंक-झोंक...

बार-बार ....

जैसे-जैसे...

वैसे-वैसे ....

3. इन वाक्यों में क्रिया शब्द को रेखांकित कीजिए ।

(क) खेल में तो यह सब **चलता** ही है।

(ख) मैं पंजाब रेजीमेंट की ओर से खेला करता था।

(ग) बाद में हम झाँसी आकर बस गए।

(घ) वह बार-बार मुझे हॉकी खेलने के लिए कहते।

(ङ) बर्लिन ओलम्पिक में हमें स्वर्ण पदक मिला।

4. नीचे लिखे शब्दों को क्रम में सजाकर वाक्य बनाइए-

(क) नौसिखिया/उस समय/मैं एक/था/खिलाड़ी।

(ख) आता/खेल में/मेरे/गया/निखार।

(ग) शर्मिंदा/वह/बड़ा/हुआ/सचमुच/खिलाड़ी।

(घ) ले जाया/मैदान से/बाहर/मुझे/गया।

कुछ करने को-

1. अखबार में रोजाना खेल का एक पृष्ठ आता है। आपको जो खबर अच्छी लगे उसे संकलित कीजिए ।
2. यह पाठ एक 'संस्मरण' है। आप भी अपना कोई संस्मरण लिखिए।